

इतिहास हंट: भारत पर अरब व तुर्क आक्रमण (711-1206 ई.) | UGC NET, TGT, PGT History Notes PDF

भारत पर मुस्लिम आक्रमण

ऋग्वेद में उल्लेखित **भरत** कबीले के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा। परंपरानुसार दुष्यंत के पुत्र **भरत** के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा। कुछ विद्वानों के अनुसार ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र **भरत** के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा। **कलिंग के राजा खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में 'भारतवर्ष'** शब्द का सबसे पहला अभिलेखीय प्रमाण मिलाता है। ईरानियों ने इस देश को "**हिन्दुस्तान**" कहकर सम्बोधित किया है तथा यूनानियों ने इसे "**इंडिया**" कहा है। **चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भारत के लिए 'इन्दू' (Yintu)** शब्द का प्रयोग किया था। हिन्द (भारत) की जनता के संदर्भ में "**हिन्दू**" शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अरबों द्वारा किया गया।

इस्लाम धर्म का उदय

सऊदी अरब में स्थित मक्का नामक स्थान पर 570 ई० में इस्लाम धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब का जन्म हुआ। **हज़रत मुहम्मद साहब कुरैश कबीला** से सम्बंधित थे। इनके **पिता अब्दुल्ला और माता अमीना** थी। इनके जन्म के 5 वर्ष बाद माँ का इन्तकाल हो जाने पर इनका पालन-पोषण दादा मुतल्लिव और चाचा अबूतालिव ने किया। 25 वर्ष की उम्र में **खदीजा** नामक विधवा से विवाह किया। जिससे उन्हें **फातिमा** नाम की पुत्री पैदा हुई, जिसका निकाह अली से सम्पन्न हुआ। मुहम्मद साहब को पहला ज्ञान (वही/Revelation) **610 ई.** में मक्का के पास '**हीरा**' (Hira) नामक गुफा में प्राप्त हुआ था। 610 ई. से 632 ई. (उनकी मृत्यु) तक लगभग 22-23 वर्षों के दौरान कुरान की आयतें धीरे-धीरे नाजिल (प्रकट) हुईं।

पैगंबर साहब के जीवन की गतिविधियों, उनके कथनों और उनके कार्यों के संकलन को **'हदीस' (Hadith) और 'सीरत' (Seerah)** [इसका शाब्दिक अर्थ है 'जीवन-चरित्र', 'जीवनी' या 'जीवन शैली'] कहा जाता है। **'कुरान'** (अल्ला ने जो कहा वही कुरान है।) का संकलन **अबूबक्र** ने किया, जो **प्रथम मुस्लिम खलीफा** थे [प्रथम चार खलीफाओं (राशीदून खलीफा) का सही कालक्रम —अबूबक्र, उमर, उस्मान, अली] । इस्लाम धर्म का प्रचार एवं प्रसार करने में वहां के लोगो ने इनका प्रबल विरोध किया जिस कारण मुहम्मद साहब ने **16 जुलाई 622 ई०** को मक्का छोड़कर वहां से 300 किमी० उत्तर की ओर **"मदीना"** आ गए। उनकी यह यात्रा इस्लाम मे **"हिजरत"** कहलाती है और इसी दिन से **'हिजरी सम्वत'** का प्रारंभ माना जाता है। इस्लाम का अर्थ अल्ला को समर्पण। इस्लाम का आधारभूत सिद्धांत अल्ला को सर्वशक्तिमान, एक ईश्वर और जगत का पालक तथा हजरत मुहम्मद को उनका संदेश वाहक पैगम्बर मानना है। यही बात उनके कलमे में दोहराई जाती है- "लाइलाहा इल्लिलाह मुहम्मद उल रसूलिल्लाह।" अर्थात अल्ला एक है उसके अलावा दूसरा कोई नहीं है और मुहम्मद उसके रसूल या पैगम्बर है। कोई भी शुभ कार्य करने से पहले मुसलमान यह कलमा पढ़ते हैं।

632 ई० में मुहम्मद साहब का इन्तकाल हो गया। और इस्लाम धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए धार्मिक नेता के चुनाव को लेकर विवाद के कारण इस्लाम धर्म भी दो सम्प्रदायो में बट गया। जो लोग मुहम्मद साहब के वंश से संबंधित व्यक्ति को खलीफा (धार्मिक नेता) बनाने के पक्ष में थे वे **शिया मतालम्बी** कहलाये और उन्होंने मुहम्मद साहब की पुत्री फातिमा और दामाद अली के बेटे हसन और हुसैन को पैगम्बर का उत्तराधिकारी माना।

सुन्नी मत के समर्थक लोगों का विचार था कि कोई भी योग्य व्यक्ति खलीफा बन सकता है।

भारत पर अरब आक्रमण

भारत पर पहला मुस्लिम आक्रमण 711 ई० में अरब आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में हुआ। मुहम्मद बिन कासिम से पूर्व **उबैदुल्लाह और बुदैल** के नेतृत्व में अभियान दल भेजा गया था, परंतु वह पराजित हुए और मारा गए। ईरान के गवर्नर **अल-हज्जाज** ने मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में अरबों को सिन्ध पर आक्रमण करने के लिए भेजा। भीषण संघर्ष के बाद अरबों ने 712 ई० में सिन्ध पर विजय प्राप्त कर ली। उस समय सिन्ध पर चच के पुत्र दाहिर का शासन था। फारसी ग्रंथ चचनामा [फतेहनामा-ए-सिंध] से अरबों की सिन्ध पर विजय की जानकारी मिलती है। [चचनामा मूलतः अरबी भाषा में लिखा गया था, जिसका बाद में अबू बक्र कुफी (या अली अहमद) ने फारसी में अनुवाद किया। चचनामा के अनुसार अरब आक्रमण के समय सिंध की राजधानी अलोर थी।]

महत्वपूर्ण तथ्य-- भारत पर प्रथम मुस्लिम आक्रमण के वर्ष के सम्बंध में विद्वानों में मतभेद है। **वी०डी० महाजन** के अनुसार यह तिथि 711 ई० है जबकि **हरिश्चन्द्र वर्मा** के अनुसार यह तिथि 712 ई० बताई जाती है।

मुहम्मद बिन कासिम ने सर्वप्रथम "**देवल**" पर आक्रमण किया था, जो एक प्रसिद्ध बंदरगाह भी था। देवल विजय के बाद **जजिया** कर लगा दिया गया। [भारत में सबसे पहले 'जजिया कर' सिंध के देवल क्षेत्र में ही लगाया गया था। जजिया कर से स्त्रियों, बच्चों, अनाथों, भिक्षुओं/ब्राह्मणों और अपाहिज व्यक्तियों को मुक्त रखा गया था।] कासिम ने इसके बाद निरून, ब्राह्मणवाद, अलोर, सिक्का, मुल्तान आदि पर अरबों ने अधिकार कर लिया। **कासिम की अंतिम विजय मुल्तान** की थी। दाहिर की राजपुत्राणी पत्नि **रानीबाई** अरबों से युद्ध करते हुए सती हो गई थी। जबकि दाहिर की दूसरी ब्राह्मण पत्नी **रानी लाडी** और उसकी दो पुत्रियों **परमल देवी** और **सूर्य देवी** को मुहम्मद बिन कासिम अपने साथ ले गया।

अरबों को आगे बढ़ने से कश्मीर के शासक ललितादित्य ने रोका। [कश्मीर के कारकोट वंशीय राजा ललितादित्य मुक्तापीड़ और गुर्जर-प्रतिहार राजा नागभट्ट प्रथम ने अरबों को आगे बढ़ने से रोका था। प्रसिद्ध इतिहासकार लेनपूल ने अरबों की सिंध विजय के बारे में क्या कहा है? —"अरबों की सिंध विजय एक परिणामहीन विजय थी।"] मुल्तान की विजय के बाद अरबों ने इसका नाम "सोने का नगर" रखा। मुल्तान की विजय में काका' ब्राह्मण (Kaka / Kaka Brahmin) ने नगर में जाने वाले जन मार्ग को कासिम को बता दिया था।

महत्वपूर्ण तथ्य-- अरबी यात्री सुलेमान (851 ई.) ने प्रतिहार शासकों को 'बौरा' और उनके राज्य को 'जुर्ज' कहा था। अरब भूगोलवेत्ता इब्न खुरदादबेह का प्रसिद्ध ग्रंथ 'किताब-उल-मसालिक-वल-ममालिक' था।

गजनवी वंश/ यामिनी वंश

गजनवी वंश का संस्थापक अलप्तगीन था। इस वंश को यामिनी वंश भी कहा जाता है। 963 ई० में अलप्तगीन की मृत्यु के बाद बलप्तगीन (963-972) गुलाम पिराई (972-977ई०) ने शासन किया। इसी के शासनकाल में इसके सेनापति सुबुक्तगीन ने गुलाम पिराई की हत्या करके सत्ता पर अधिकार कर लिया। सुबुक्तगीन ही पहला तुर्क था जिसने हिन्दूशाही वंश के शासक जयपाल को पराजित किया था। हिन्दूशाही राज्य की राजधानी उद्भांडपुर / वेहंद / ओहिंद थी। 997 ई० में सुबुक्तगीन की मृत्यु हो गई।

सुल्तान महमूद गजनवी

सुबुक्तगीन के समय से ही गजनी और हिन्दूशाही राज्य का लम्बा संघर्ष आरम्भ हुआ जो सुल्तान महमूद के समय तक चलता रहा और जिसका अंतिम परिणाम हिन्दू राज्य का नष्ट होना था।

सुबुक्तगीन की मृत्यु के बाद उसका बेटा महमूद गजनवी 998 ई0 में गजनी का शासक बना।

सर हेनरी इलियट के अनुसार महमूद ने 17 बार भारत पर आक्रमण किया।

1000 से 1027 के बीच महमूद गजनवी ने 17 बार आक्रमण किया लेकिन उसके इन आक्रमणों का उद्देश्य भारत में स्थायी मुस्लिम शासन की स्थापना करना नहीं था बल्कि भारत से धन लूटना था। बगदाद के खलीफा **अल-कादिर-विल्लाह** ने महमूद को **यमीन-उद-दौला** (साम्राज्य का दाहिना हाथ) तथा **आमीन-उल-मिल्लाह** (मुसलमानों का रक्षक) की उपाधियां प्रदान कीं। [महमूद गजनवी खलीफा से मान्यता प्राप्त कर प्रथम वैधानिक सुल्तान की उपाधि लेने वाला प्रथम तुर्क शासक बना।]

महमूद गजनवी शिक्षित एवं सुसभ्य था। वह अपने दरबार में विद्वानों और कलाकारों को आश्रय और सम्मान प्रदान करता था। उसका दरबारी इतिहासकार **उत्बी** था। उसने "**किताब-उल-यामिनी**" अथवा "**तारीख-ए-यामिनी**" नामक ग्रन्थ की रचना की। इसके अतिरिक्त इसके दरबार में दर्शन, ज्योतिष और संस्कृत का उच्च कोटि का विद्वान **अलबरूनी**, "**तारीख-ए-सुबुक्तगीन**" का लेखक **बैहाकी** जिसे इतिहासकार **लेनपूल** ने '**पूर्वी पेप्स**' की उपाधि प्रदान की थी, फारस का कवि **उजारी**, खुरासानी विद्वान **तूसी** एवं **उंसुरी**, विद्वान **असजदी** और **फरूखी** प्रमुख व्यक्ति थे। [महमूद गजनवी का 'राजकवि' (Poet Laureate) **उंसुरी** था।]

महमूद गजनवी के दरबार का एक प्रसिद्ध इतिहासकार **फिरदौसी** भी था। जिसने '**शाहनामा**' नामक ग्रंथ की रचना की। इसे '**पूर्व के होमर**' की उपाधि दी जाती है। **फरिश्ता** ने '**तारीख-ए-फरिश्ता**' या '**गुलशन-ए-इब्राहिमी**' नामक ग्रंथ की रचना की। इसका पूरा नाम **मुहम्मद कासिम हिन्दूशाह** था। इसकी पुस्तक '**तारीख-ए-फरिश्ता**' बीजापुर के शासक **इब्राहिम आदिलशाह** को समर्पित है।

महमूद गजनवी के साथ प्रसिद्ध इतिहासकार **अलबरूनी** 11 वीं सदी में भारत आया। उसकी पुस्तक '**किताब-उल-हिन्द**' या '**तहकीक-ए-हिन्द**' से तत्कालीन भारत की सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति की जानकारी मिलती है। यह पुराणों का अध्ययन करने वाला प्रथम मुस्लिम विद्वान था। उसका जन्म 937 ई० में हुआ, वह खीवा (प्राचीन ख्वारिज्म) देश का रहने वाला था। वह मात्र इतिहासकार ही नहीं था, उसके ज्ञान और रुचियों की व्याप्ति जीवन के अन्य क्षेत्रों तक थी जैसे खगोल विज्ञान, भूगोल, तर्कशास्त्र, औषधि विज्ञान, गणित, तथा धर्म और धर्मशास्त्र। उसने संस्कृत का अध्ययन किया और अनेक संस्कृत रचनाओं का उपयोग किया जिसमें ब्रह्मगुप्त, बालभद्र तथा वारामिहिर की रचनाएं विशेष उल्लेखनीय हैं। उसने जगह-जगह भागवत गीता, विष्णु पुराण, तथा वायु पुराण को उद्धृत किया। [अलबरूनी के अनुसार 11वीं सदी के भारत में अंत्यज (अछूत) वर्ग में 8 जातियां शामिल थीं। (धोबी, मोची, जादूगर, टोकरी बनाने वाले, नाविक, मछुआरे, व्याध, जुलाहे)]

अलबरूनी ने अरबी भाषा में 'तहकीक-ए-हिन्द' नामक ग्रंथ की रचना की। सवप्रथम एडवर्ड साची ने अरबी भाषा से इस ग्रंथ का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया। इसका हिन्दी अनुवाद रजनीकांत शर्मा द्वारा किया गया। महमूद गजनवी ने संस्कृत मुद्रालेख के साथ चाँदी के सिक्के जारी किये। इन सिक्कों पर दोनों तरफ दो अलग-अलग भाषाओं में मुद्रालेख अंकित हैं। ऊपरी भाग पर अंकित मुद्रालेख अरबी भाषा में था तथा दूसरी ओर अंकित लेख संस्कृत भाषा (देवनागरी लिपि) में था। सिक्को में मध्य भाग में संस्कृत भाषा में लिखा था "अव्यक्तमेकम मुहम्मद अवतार नुरूपति महमूद।" [महमूद गजनवी के इन चाँदी के सिक्कों को 'दिरहम' कहा जाता था, जिन पर देवनागरी लिपि में संस्कृत लेख लिखा था।]

महमूद गजनवी ने एक विश्वविद्यालय, एक अजायबघर, एक पुस्तकालय, गजनी की विख्यात जामा मस्जिद का निर्माण करवाया। महमूद गजनवी को गाजी, मूर्ति भंजक और बुतशिकन कहा गया है (उत्बी द्वारा) [गजनवी की सेना में '**तिलक**' और '**सेवंदराय**' नामक दो हिंदू उच्च पदों (सेनापति) पर आसीन थे।]

महमूद गजनवी के महत्वपूर्ण आक्रमण

- 1000 ई० में सीमावर्ती कुछ किलो को जीता।
- 1001 ई० में हिन्दूशाही वंश का शासक जयपाल के विरुद्ध। [युद्ध में हारने के बाद आत्मग्लानि के कारण राजा जयपाल ने चिता बनाकर आत्मदाह कर लिया था।]
- 1003-04 ई० में भेरा पर आक्रमण किया। (शासक वीजीराय)
- 1006 ई० में मुलतान को जीता (शासक अब्दुल फतह दाऊद)।
- 1009 ई० में आनंदपाल को पराजित किया। [आनंदपाल के विरुद्ध युद्ध में गजनवी की सेना को हिंदू जनजाति (खोखर जनजाति) ने भारी क्षति पहुंचाई थी।]
- 1014 ई० में थानेश्वर को लूटा (चक्रस्वामी महाराज की मूर्ति तोड़ी)।
- 1015-16 ई० में कश्मीर पर आक्रमण किया। यह आक्रमण असफल रहा। [महमूद गजनवी का कश्मीर अभियान (लोहार वंश की रानी दिग्दा/संग्रामराज के समय) भारतीय अभियान पूरी तरह असफल रहा।]
- 1018 ई० में कन्नौज राज्य पर आक्रमण। [बिना लड़े भागने वाले कन्नौज के प्रतिहार राजा राज्यपाल की हत्या (1019 ई.) का मुख्य सूत्रधार चंदेल शासक विद्याधर था, जिसने अपने सहयोगी/सामंत ग्वालियर के कच्छपघात राजा अर्जुन के माध्यम से इस हत्या को अंजाम दिया था।]
- 1019-20 ई० में चंदेल शासक विद्याधर पर आक्रमण। [महमूद गजनवी का सफलतापूर्वक प्रतिरोध करने वाला एकमात्र शक्तिशाली हिंदू शासक चंदेल राजा विद्याधर]
- 1024 से 26 ई० में गुजरात अभियान जिसमें सोमनाथ मंदिर को लूटा। (शासक भीम देव, राजधानी अन्हिलवाड़ा) [सोमनाथ आक्रमण के समय गुजरात का सोलंकी/चालुक्य शासक भीमदेव प्रथम था। सोमनाथ मंदिर की लूट के बाद गजनवी वापस जाते समय सिंध के रेगिस्तान (जाटों के डर से रास्ता बदलकर) रास्ते से गजनी लौटा था।]
- 1027 ई० में सिन्ध के जाटों पर आक्रमण किया यह महमूद गजनवी का भारत में अंतिम आक्रमण था।

शिहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी

मध्य एशिया के शासक शिहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी [मुहम्मद गोरी शंशबानी वंश (गोर प्रदेश)] से संबंधित था।] ने 1192 ई० में उत्तर भारत को जीता। गोरी का **प्रथम आक्रमण 1175 ई० में मुल्तान पर हुआ।** और 1205 ई० तक वह बराबर साम्राज्य विस्तार और पूर्व विजित राज्यों की रक्षा के लिए भारत पर आक्रमण करता रहा।

1178 ई० में मुहम्मद गोरी ने गुजरात पर आक्रमण किया किन्तु **मूलराज द्वितीय** या भीम द्वितीय ने अपनी योग्य एवं साहसी विधवा माँ **नायिका देवी** के नेतृत्व में '**आबू पर्वत**' (कासद्रह) के निकट गोरी की सेना का मुकाबला किया और युद्ध में अपनी वीरता का परिचय देते हुए गोरी को बुरी तरह पराजित कर दिया। यह मुहम्मद गोरी की भारत में प्रथम पराजय थी।

सन 1191 ई० में गोरी ने भारत पर फिर आक्रमण किया जिसमें उसका मुकाबला उत्तर भारत के सिरमौर कहे जाने वाले चौहान वंशीय वीर शासक पृथ्वीराज चौहान तृतीय से तराइन के मैदान में हुआ यह युद्ध भारतीय इतिहास में '**तराइन के प्रथम युद्ध**' के नाम से प्रसिद्ध है। इस युद्ध में गोरी मुश्किल से अपनी जान बचाकर गजनी भागने में सफल हुआ। [तराइन के प्रथम युद्ध में गोरी को दिल्ली के गोविंद राय (गोविंदराज) भाले के वार से गंभीर रूप से घायल किया था।]

एक वर्ष बाद सम्पूर्ण तैयारियों के साथ गोरी 1192 ई० में फिर भारत आया और तराइन के ही मैदान में पृथ्वीराज चौहान से उसका भयंकर युद्ध हुआ जो **तराइन के द्वितीय युद्ध** के नाम से जाना गया। इस युद्ध में गोरी विजय प्राप्त करने में सफल हुआ। इस विजय के बाद भारत में मुस्लिम शक्ति की स्थापना हुई। इसी कारण यह युद्ध भारतीय इतिहास में अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। [इस युद्ध के बारे में इतिहासकार वी. ए. स्मिथ का कथन है कि "तराइन का द्वितीय युद्ध भारतीय इतिहास का एक निर्णायक युद्ध था, जिसने भारत पर तुर्कों की प्रभुसत्ता स्थापित कर दी।"]

गोरी के वापस जाने के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने साम्राज्य विस्तार के उद्देश्य से बुलंदशहर, मेरठ, दिल्ली पर आक्रमण कर प्रत्यक्ष नियंत्रण में ले लिया। और 1193 ई० से दिल्ली भारत में गोरी के साम्राज्य की राजधानी बनी। इसके बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने रणथम्भौर और कोल (अलीगढ़) की विजय की।

सन 1194 ई० में गोरी फिर भारत आया और उसने चन्दावर के युद्ध में कन्नौज के गहड़वाल शासक जयचन्द को पराजित किया। चन्दावर वर्तमान में फिरोजाबाद जिले में यमुना नदी के तट पर स्थित है। मोहम्मद गोरी ने भारत में प्रचलित राजपूत शैली के सिक्के जारी रखे। उसके सिक्कों पर एक तरफ लक्ष्मी देवी की आकृति बनी थी और दूसरी तरफ देवनागरी लिपि में 'श्री मोहम्मद बिन साम' तथा अरबी में 'कलमा' खुदा हुआ था। भारत में गोरी की विजय और भारतीय प्रदेशों पर अधिकार करने के बाद उत्तर भारत में 'इक्ता प्रथा' की स्थापना की गई। और भारत में कुतुबुद्दीन ऐबक को प्रथम इक्ता प्रदान की गई। [भारत में गोरी द्वारा सबसे पहली 'इक्ता' कुतुबुद्दीन ऐबक को 'कोहराम' (हरियाणा) की दी गई थी।] 1192 ई० में तराइन के द्वितीय युद्ध में कुतुबुद्दीन ऐबक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वस्तुतः 1192--1206 ई० तक उसने गोरी के प्रतिनिधि के रूप में उत्तरी भारत के विजित प्रदेशों का प्रशासन संभाला। उस अवधि में ऐबक ने उत्तरी भारत में तुर्की शक्ति का विस्तार भी किया

बिहार और उत्तरी बंगाल की विजय के बारे में गोरी एवं ऐबक ने सोचा भी नहीं था। इस कार्य को गोरी के एक साधारण दास इखित्यारुद्दीन मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने किया। उसने 1202-03 ई० में बिहार की विजय की तथा नालंदा एवं विक्रमशिला विश्व विद्यालय को नष्ट कर दिया और राजधानी उदन्तपुर (उदंतपुरी) पर कब्जा कर लिया। [बख्तियार खिलजी के बिहार और बंगाल अभियानों का विस्तृत वर्णन मिन्हाज-उस-सिराज ग्रंथ तबकाते-नासिरी में मिलता है।] उसने 1204-05 ई० में बंगाल पर आक्रमण किया। इस समय वहाँ का शासक लक्ष्मण सेन था। वह बिना

युद्ध किये ही भाग निकला। तुर्की सेना ने राजधानी नादिया में प्रवेश कर बुरी तरह लूट-पाट की। राजा की अनुपस्थिति में नगर ने आत्मसमर्पण कर दिया। लक्ष्मण सेन ने भाग कर पूर्वी बंगाल में शरण ली और कुछ समय तक वही शासन करता रहा। इख्तियारुद्दीन ने भी सम्पूर्ण बंगाल को जीतने का प्रयत्न नहीं किया। इख्तियारुद्दीन ने लखनौती को अपनी राजधानी बनाया। **प्रोफेसर हबीब** के अनुसार "तुर्कों द्वारा उत्तर पश्चिम की विजय ने क्रमशः शहरी क्रांति और ग्रामीण क्रान्ति को जन्म दिया।"

15 मार्च 1206 ई. को गज़नी लौटते समय झेलम नदी के तट पर 'धम्यक' नामक स्थान पर शाम की नमाज़ पढ़ते हुए मुहम्मद गोरी की हत्या खोखर जनजातियों द्वारा कर दी गई थी।